International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, January-June 2015, Submitted in March 2015, iajesm2014@gmail.com

# शिक्षा जगत में शोध समस्या का औचित्य तथा चयन: चुनौती

नीना चावला, अनुसन्धान विद्वान, शिक्षा विभाग, जैन विश्वा भारती इंस्टिट्यूट, लाडनू, राजस्थान
डॉ बी एल जैन, एच ओ डी, शिक्षा विभाग, जैन विश्वा भारती इंस्टिट्यूट, लाडनू, राजस्थान

## प्रस्तावना :—

शिक्षा के द्वारा हम ज्ञानार्जन करते हैं, संस्कारशील होते हैं। इन संस्कारों तथा ज्ञान का उपयोग हम जनकल्याण में करते हैं। शिक्षा ज्ञानार्जन तथा कौशलों के प्रशिक्षण के साथ में संस्कारशील बनाती है। संस्कारशीलता से तात्पर्य ऐसे शैक्षिक वातावरण के निर्माण से है जिसमें शिक्षार्थी जीवन मूल्यों, आदर्शो एवं मान्यताओं से भली भांति परिचित हो तथा उन्हें पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में चरितार्थ कर सके।

शिक्षा व्यक्ति को श्रमशील तथा कर्त्तव्यपरायण बनाती है जिससे व्यक्ति कर्त्तव्यों का निर्वाह सही दिशा में मेहनत से कर सकें।

इसी को ध्यान में रखते हुए तथा समुदाय को शिक्षित करने के लिए शिक्षा के लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य — ज्ञानार्जन, संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन तथा उसे आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित करना है। शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हमनें विद्यालयों का निर्माण किया तथा यह प्रयास किया कि बच्चे के जन्म के बाद जैसे ही वह शारीरिक रूप से सामर्थ्यवान हो उसे विद्यालयों में शिक्षित किया जाए। उद्देश्य पूर्ति के लिए ही पाठ्यक्रम निर्माण तथा इसे बच्चों को सिखाने के लिए समुचित शिक्षण विधियों का निर्माण किया गया। इसके लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित कर विद्यालयों में नियुक्त किया गया।

इस प्रकार विद्यालयों में बच्चों को शिक्षित करने के लिए एक सम्पन्न तंत्र का विकास किया गया। इतना सब हो पाने के बाद भी हमारे शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति नहीं हो पा रही है। आज हमारे पास प्रचुर शिक्षित जन समुदाय है, उसके बाद भी हम ऐसी समस्याओं से घिरे हैं जिनके लिए हम स्वंय जिम्मेवार हैं। अधिकांशतः शिक्षित वर्ग ने ही पर्यावरण के मूल घटकों में असंतुलन ला दिया है। इससे हमारे अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो गया है। एक अशिक्षित को तुलना में एक पढ़े लिखे व्यक्ति में नैतिक प्रदूषण (जीवन मूल्यों का अवमूल्यन) सर्वाधिक हुआ है।

आज शिक्षार्थी विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर अध्यापक, इंजीनियर, डॉक्टर आदि तो बन जाता है किन्तु उसकी समझ अधिक विकसित नहीं हो पाने के कारण उसकी मूल प्रवृत्तियों में अंतर नहीं आ पाता है। फलतः शिक्षित होने के बाद भी स्वार्थ, लोभ, लालच, क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष एवं मोह आदि से अनुचारित रहता है। ऐसा व्यक्ति अशिक्षित व्यक्ति की तुलना में अपने पद तथा उपाधियों का अधिक दुरूपयोग कर लेता है या अपने सभ्य कहलाने की होड़ में अपनी मूल प्रवृत्तियों का दमन कर एक कृत्रिम और दिखावटी जीवन जीने का अभ्यास करके मानसिक रोगी जो जाता है।

इन्हीं कारणों से हमारा पर्यावरण पूर्णतः प्रदूषित हो चुका है। वायु तथा जल पूर्णतः प्रदूषित हो चुके हैं इसके अलावा ध्वनि, मृदा तथा खाद्य पदार्थ भी प्रदूषण से नहीं बचे हैं। हमारा सर्वाधिक नुकसान नैतिक प्रदूषण से हुआ है। समाज में चोरी, डकैती, बलात्कार तथा चारों ओर भ्रष्टाचार का बोलबाला है। हम किसी भी तरह से अपनी मूल प्रवृत्तियों को तुष्ट करना चाहते हैं। इससे समाज में असुरक्षा, चिंता तथा भय व्याप्त हो गया है। आज व्यक्ति के पास सबकुछ होते हुए भी वह सुखी नहीं है।

एक समय था जब हमारा कोई गुरूघंटाल होता था। यह वह व्यक्ति होता था जिसमें हमारा अंधविश्वास होता था लेकिन आज हमारा किसी में भी विश्वास नहीं है। यहां तक कि अपने आप में भी नहीं। इसका परिणाम कोई कुछ भी करने को स्वतंत्र, कोई आदर्श नहीं, कोई मर्यादा नहीं कर्त्तव्य पूर्ति में स्वच्छंदता शुभ संकेत नहीं है। यूं कहें कि मूल्यों का हनन चरम पर है।

भारत की सबसे बड़ी ताकत है साझा संस्कृति, परस्पर प्यार करना, अपनापन, सभी धर्मो को इज्जत देना और प्यार की नजरों से देखना इसी वजह से आज तक हमारी हस्ती मिटी नहीं। आज जीवन मूल्यों के पतन से हमारी ताकत कम हो रही है।

आज का विद्यार्थी विद्याध्ययन करने तथा श्रम करने में नाक–भौं सिकोड़ता है। थोड़ा सा श्रम करके श्रेष्ठतम कीर्ति की कामना करता है। यदि हम परिश्रम करें तो हमारे पास इतने हाथ हैं कि दुनियां की कोई ताकत नहीं जो हमें परास्त कर सके।

**आचार्य चाणक्य ने कहा है — "पुरूष कारांनुवर्तते देवं"**

अर्थात भाग्य पुरूषार्थ का अनुगमन करता है। श्रमहीन योजना का भाग्य भी साथ नहीं देता है। हम मानते हैं कि भारत एक गरीब देश है तथा इसका कारण बढती जनसंख्या है। मैं ऐसा नहीं मानता। यहां की गरीबी का कारण है यहां का अधिकांश जनसमुदाय आलसी तथा निकम्मा है। जापान तथा अधिकांश यूरोपियन देश ऐसे हैं जहां जनसंख्या घनत्व हमारे देश से कहीं ज्यादा है लेकिन वहाँ के समुदाय के पुरूषार्थ ने उन्हें हमसे कहीं आगे ला खड़ा किया है।

ISSN -2393-8048, January-June 2015, Submitted in March 2015, iajesm2014@gmail.com

बच्चों में संस्कार तथा गुणों का विकास घर तथा विद्यालय परिवेश में होता है। आज यदि हमारा नैतिक पक्ष दुर्बल है तो निश्चित रूप से शैक्षिक लक्ष्यों की पूर्ति तथा सामाजिक परिवेश में कमियों को दूर करना होगा।

शिक्षक–प्रशिक्षणार्थियों में, जो कि भावी शिक्षक हैं, उनमें पर्यावरण तथा जीवन मूल्यों के प्रति जागरुकता का अध्ययन किया जाना जरूरी है जिससे समय रहते इस के लिए शैक्षिक लक्ष्यों, पाठ्यक्रम तथा शिक्षण विधियों में समुचित परिवर्तन लाकर सामाजिक समस्याओं तथा पर्यावरण प्रदूषण से बचा जा सके। इसलिए शोधकर्त्री ने पर्यावरण व जीवन मूल्यों के प्रति जागरुकता अध्ययन विषय शोध के लिए लिया है।

## समस्या कथन :–

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन निम्नाकित प्रकार से है –

**''बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण तथा जीवन मूल्यों के प्रति जागरुकता का अध्ययन।''**

## शोध में प्रयुक्त शब्दावली :–

**1. पर्यावरण :–**

पर्यावरण का तात्पर्य हमारे चारों ओर के उस वातावरण से है जिसमें भौतिक एवं रासायनिक, जैविक एवं अजैविक घटक सम्मिलित है।

**2. मूल्य :–**

एक प्रकार की अवधारणाएं है, परन्तु अन्य सम्प्रत्ययों की भांति ये अनुभवों में निहित न होकर मानव मस्तिष्क में अन्तर्निहित होती है। मूल्य मानव अस्तित्व में गुणों का प्रतिनिधित्व करते है जो कि मानव जीवन के विभिन्न अनुभवों में निहित होते है।

**3. बी.एड प्रशिक्षणार्थी :–**

वे छात्र–छात्राएं जो शिक्षक बनने हेतु प्रशिक्षण व सैद्वांतिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रवेश लेते है।

**4. जागरूकता :–**

जागरूकता का तात्पर्य किसी विषय को जानने की उत्सुकता से है।

## अध्ययन के उद्देश्य :–

## अर्थ तथा महत्व :–

उद्देश्य ऐसे मानक होते हैं जो किसी भी शोद्यार्थी को अध्ययन करने के लिए दिशा देते हैं। दिशाहीन शोद्यार्थी अपना श्रम तथा समय व्यर्थ गंवा सकता है। एक प्रकार से कार्य करने से पूर्व हम कार्य की एक योजना तैयार करते हैं तभी कार्य पूरा और सफल हो पाता है। उसी प्रकार कार्य में फल प्राप्ति हेतु हमें छोटे–छोटे लक्ष्य निर्धारित करने होते हैं। ये लक्ष्य ही उद्देश्य कहलाते हैं।

लक्ष्यहीन (उद्देश्यहीन) शोध कभी भी सफल नहीं हो सकता। समय पर सही कार्य करने के लिए उद्देश्य निर्धारण जरूरी होता है। शोद्यार्थी के सामने एक बड़ी कार्य योजना होती है। उस कार्य योजना की सफलता के लिए तथा समय पर पूरा करने के लिए वह सम्पूर्ण कार्य को छोटे–छोटे लक्ष्यों में बांट कर चलता है तभी कार्य सही तथा समय पर पूरा हो पाता है। आज के वैज्ञानिक युग में प्रगति के कर्णधार केवल शिक्षक एवं विद्यार्थी ही हैं। पर्यावरण तथा मूल्यों के संरक्षण का दायित्व इन्हीं के कंधों पर टिका है। बदलते युग में प्रजातंत्र का भविष्य इन्हीं के भावी जीवन के भरोसे है। ये भावी शिक्षक नई पीढ़ी, समाज तथा देश को एक अच्छी छवि, स्वरूप तथा दिशा प्रदान करेंगे। अतः शोधकर्त्री ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों को अध्ययन का आधार बनाया है।

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नांकित उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है :–

1. समग्र रूप से बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
3. कला एवं विज्ञान संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
4. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
5. कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
6. आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
7. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

8. समग्र रूप से बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना
9. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
10. कला एवं विज्ञान संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
11. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
12. कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
13. आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।
14. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

## शोध की प्राकल्पनाएँ :–

प्राकल्पनाएँ अनुसंधान कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। इसे अनुसंधान कार्य की नींव कहा जाता है। परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ है – ''पूर्व चिंतन''।

शोधार्थी के लिए समस्या से सम्बंधित सभी तथ्यों को एकत्र करना सम्भव नहीं होता। अतः वह अपने मस्तिष्क में सम्भावित कार्य कारण का सम्बंध स्थापित कर लेता है तथा वह ऐसा सिद्धान्त बनाने की कोशिश करता है जिसके बारे में वह कल्पना का सहारा लेता है ताकि वह सिद्धांत उसके अध्ययन का आधार सम्भव हो सके। इस विचार या कल्पना को ही प्राकल्पना कहते हैं।

इस प्रकार जब शोधार्थी किसी समस्या के समाधान के लिए निर्देशित व्याख्या बनाता है तो इसे प्राकल्पना कहा जाता है।

### गुड तथा स्केट्स के अनुसार –

''परिकल्पना एक अनुमान है जिसे अंतिम अथवा अस्थायी रूप से किसी निरिक्षित तथ्य अथवा दशाओं की व्याख्या हेतु स्वीकार किया गया हो एवं जिससे अन्वेषक को आगे मार्गदर्शन प्राप्त होता है।''

## परिकल्पना का स्वरूप :–

सांख्यिकी परीक्षण के लिये प्रयुक्त अध्ययन की परिकल्पना को शून्य परिकल्पना एवं धनात्मक परिकल्पना के रूप में विकसित किया जाता है। एक अच्छे शोध के लिये परिकल्पना का निर्माण अत्यन्त आवश्यक है। इससे समस्या का स्वरूप विशिष्ट, सूक्ष्म और सहज हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पना को शून्य परिकल्पना के रूप में बनाया गया है।

### शून्य परिकल्पना :–

शून्य परिकल्पना की मान्यता यह है कि दो चरों में कोई अन्तर नहीं है। इसका निर्माण अस्वीकृत होने के उद्देश्य से किया जाता है।

**गैरेट के अनुसार,** ''शून्य परिकल्पना की यह मान्यता है कि समष्टि के दो प्रतिदर्श मध्यमानों में सत्य अन्तर नहीं है।''

## प्रस्तुत शोध की प्राकल्पनाएँ :–

शोध कार्य के लिए निम्नांकित प्राकल्पनाएँ की गई हैं –

1. समग्र रूप से बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
2. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
3. कला एवं विज्ञान संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
4. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
5. कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
6. आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
7. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की पर्यावरण के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

8. समग्र रूप से बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
9. शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
10. कला एवं विज्ञान संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
11. विज्ञान एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
12. कला एवं वाणिज्य संकाय के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
13. आरक्षित एवं सामान्य वर्ग के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।
14. महिला एवं पुरूष बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की जीवन मूल्यों के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

## शोध का परिसीमन :–

शोध की निम्नांकित सीमाएँ हैं –

1. प्रस्तुत शोध बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत शोध में केवल दो जिलों के प्रशिक्षणार्थियों को ही अध्ययन हेतु लिया है।
3. प्रस्तुत शोध में 800 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया है।
4. प्रस्तुत शोध में 400 छात्र तथा 400 छात्राओं पर अध्ययन किया है।
5. प्रस्तुत अध्ययन में 400 शहरी तथा 400 ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों पर अध्ययन किया है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची


ढांढियाल एवं फाटक : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'' राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972

ढौडियाल, एस. फाटक ए.: ''शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र'' राज. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर (संस्करण द्वितीय) 1982

डोल्फे, ऑटो एस. : ''वैल्यू इन कल्चर एण्ड क्लास रूम'' हार्पर न्यूयॉर्क, 1958

दुबे, शशिप्रभा : ''ए स्टडी ऑफ दि एटिट्यूड ऑफ स्टूडैंटस, टीचर्स एण्ड पेरेंट्स एनवायर्नमेंटल प्रॉबलम्बस ऑफ यूजिंग वेल्यू शीट्स टू मोटीफाईट'' पी.एच.डी. शिक्षा, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर 1994

देशाई, अंजाना : ''एन्वायरमैंटल इन्टरेस्ट इनसाइन्स स्टूडेंट्स'' 1982

देवी, भादवानी : ''निराश्रित व सामान्य विद्यार्थियों की पर्यावरणीय सजगता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'' एम.एड., अजमेर विश्वविद्यालय, अजमेर

राजस्थान में शिक्षा अनुसंधान : सम्प्राप्तियाँ एवं सम्भावनाएँ/3, 1997

एनसाइक्लोपिडिया ऑफ : ''पर्यावरण शिक्षा'' विद्या विहार, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, एज्यूकेशन रिसर्च 1992